सफलता की कहानियां

-जिला सोलन

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

—हिमाचल सरकार—

मार्गदर्शन

ओंकार शर्मा (भा.प्र.से.)
प्रधान सचिव (कृषि)

राकेश कंवर (भा.प्र.से.)
विशेष सचिव (कृषि) एवं
राज्य परियोजना निदेशक

संकलन एवं संपादन

प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल
कार्यकारी निदेशक

रोहित पराशर
सहायक जनसंपर्क अधिकारी

रमन कान्त
उप-संपादक

सहयोग

डॉ० रविंद्र सिंह
जिला परियोजना निदेशक, सोलन

डॉ० अजब नेगी
जिला परियोजना उप-निदेशक-I, सोलन

डॉ० धर्मपाल गौतम
जिला परियोजना उप-निदेशक-II, सोलन

मुख्यमन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

हमारे राज्य को 'देवभूमि' के नाम से जाना जाता है। यहां का किसान–बागवान मेहनतकश, ईमानदार तथा नई तकनीक की स्वीकार्यता हेतु हमेशा तत्पर रहता है। प्रदेश के इन्हीं किसान–बागवानों के कारण आज हमें देश भर में 'फल राज्य' के रूप में जाना जाता है। मौसमी–बेमौसमी सब्जी उत्पादन में भी 7,500 करोड़ से अधिक की आय प्रदेश आज अर्जित कर रहा है। लेकिन इस बढ़ती खुशहाली में किसान का खेत से प्रवासन, कीटनाशकों के साथ रसायनों का बढ़ता एवं अंधाधुंध प्रयोग, बढ़ती कृषि–बागवानी–लागत और भोजन व फल–सब्जी में पाए जाने वाले इन रसायनों के अंश प्रदेश के सामने एक चुनौती भी पेश कर रहे हैं। साथ ही 2022 तक किसान–बागवान की आय दोगुनी करने का मा० प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना भी हमें पूरा करना है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के शुभारम्भ से हमारी सरकार ने यह पहल आरम्भ कर दी है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से बड़ी तीव्र गति से खेती संरक्षण एवं किसान आय वृद्धि हेतु कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। सोलन जिला में प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता की कहानियों का प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है।

मुझे पूर्ण आशा है कि परियोजना के अधिकारियों के मार्गदर्शन में यह सफल किसान अपने–2 गांव तथा पंचायत में 'प्राकृतिक खेती' के इस अभियान को तेजी से आगे बढ़ाएंगे। जिला में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' से जुड़े हुए सभी किसानों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएं।

– जयराम ठाकुर

कृषि, पशुपालन, मत्स्य, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री

हिमाचल प्रदेश

शिमला – 171002

हिमाचल प्रदेश सरकार की अति महत्वकांक्षी योजना 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' के अंर्तगत जिस तरह से 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को अपनाने हेतु किसान–बागवान रूचि दिखा रहे हैं, यह निश्चय ही प्रदेश के लिए बहुत उत्साहवर्धक है। पिछले दो वर्षो में लगभग 77,000 किसान–बागवानों का 2,957 पंचायतों में प्राकृतिक खेती से जुड़ना यह आभास दिलाता है कि प्रदेश के सभी कृषि–भौगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर किसान–बागवानों ने इस पद्धति को अपनाने का चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार कर लिया है।

इस परियोजना के कार्यान्वयन हेतु गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) द्वारा विभिन्न फसलों तथा फलों के उत्पादन, कीट–बीमारी प्रबंधन तथा किसान आय वृद्धि इत्यादि मानकों पर एकत्र किए आंकड़े निश्चित रूप से इस योजना की अपार सफलता को बयान कर रहे हैं। प्रदेश में किसानों का खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों के फसल उत्पादन कर किसान आय दोगुनी करने तथा प्रदेश के जल–जमीन एवं पर्यावरण को समृद्ध बनाने हेतु इस योजना का कार्यान्वयन एक सुखद तथा अनुकरणीय पहल है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चे में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओं का संकलन एवं प्रकाशन इस दिशा में एक सराहनीय प्रयास है। नए किसान–बागवानों की जागरूकता एवं शिक्षण हेतु ऐसे संकलन एक प्रेरणा का काम करेंगे। मेरी इन सभी किसान–बागवानों को शुभकामनाएं तथा 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' (SPIU) को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

–वीरेन्द्र कंवर

प्रधान सचिव
कृषि एवं जनजातीय विकास
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

कृषि – बागवानी क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश के किसानों ने एक अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। लेकिन इसी खेती – बागवानी में कुछ प्रमुख चुनौतियां भी हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रही हैं। खेती में रसायनों का दुरूपयोग जिससे खेती की लागत का बढ़ना, उत्पादकता का स्थिर होना या घटना, एक – फसल खेती एवं उससे बाजार में फसल की प्रचुरता से भाव न मिलना इत्यादि प्रमुख हैं। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना का शुभारम्भ कर प्रदेश सरकार ने 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाने का नीतिगत फैसला लिया है।

इस खेती विधि को देशभर में मिल रही अपार सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह विधि खेती को रसायनमुक्त कर किसान के खेती व्यय को बहुत कम कर देती है। इसमें पानी की आवश्यकता भी घट जाती है तथा भूमि की उर्वरता लगातार बनी रहती है।

सरकार द्वारा गठित 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' ने इस परियोजना के लक्ष्य प्राप्ति हेतु गम्भीर प्रयास प्रारम्भ किये हैं। आंकड़ों के अनुसार 77,107 से अधिक किसानों का इस विधि से जुड़ाव इस तथ्य को साबित करता है कि यह विधि किसान आय वृद्धि हेतु एक सशक्त विकल्प है।

परियोजना के संचालन के थोड़े समय बाद ही 'प्राकृतिक खेती' से जुड़े सफल किसानों की कहानियों का प्रकाशन इस परियोजना का सफलता की ओर बढ़ना दर्शाता है। मैं सोलन जिला के सभी प्राकृतिक किसानों को अपनी शुभकामनाएं देता हूं। 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' को इस प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई।

– ओंकार शर्मा

विशेष सचिव, कृषि
हिमाचल प्रदेश
शिमला – 171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखवाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती – बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रासायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ।

'जैविक कृषि' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है। 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले दो वर्ष के छोटे से अन्तराल में 77,107 से अधिक किसान – बागवानों ने अपने – 2 खेत – बगीचे में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं।

यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

सोलन जिला के सफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रूप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

– राकेश कंवर

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती-संकल्पना

न्यूनतम लागत, अधिक उपज, उच्च गुणवत्ता, स्वस्थ पर्यावरण, जहर-रोग-कीट-प्राकृतिक संकट-कृषि कर्ज एव चिंता मुक्त के साथ-साथ किसान-बागवान को समृद्ध, खुशहाल एवं स्वावलम्बी बनाने वाली खेती ही-सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती है।

प्राकृतिक खेती, किसानों की खेती के लिए आवश्यक आदानों की बाजारी खरीद को एकदम से खत्म करती है। इस विधि की यह परिकल्पना है कि किसान सभी आवश्यक आदान घर या इसके आसपास उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही बनाएगा। इन सभी क्रियाओं का इसलिए 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नामकरण किया गया है जिसमें 'शून्य लागत' का अभिप्राय है कि फसल में आदान आवश्यकता हेतु बाजार से कुछ भी नहीं खरीदना।

प्राकृतिक खेती के संचालन के 4 चक्र

1. **जीवामृत** किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर, मूत्र तथा अन्य स्थानीय उपलब्ध सामग्रियों जैसे: गुड़, दाल का आटा तथा अदूषित या सजीव मिट्टी के मिश्रण से बनाया हुआ घोल, भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या में बढ़ोतरी करता है। परम्परागत खेती से यह प्राकृतिक खेती भिन्न है क्योंकि इसमें गाय का गोबर और मूत्र, जैविक खाद के रूप में नहीं बल्कि, एक जैव-जामन के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह जामन, भूमि में लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं एवं स्थानीय केंचुओं की संख्या एवं गतिविधियों को सर्वश्रेष्ठ स्तर तक बढ़ाकर जमीन में पहले से अनुपलब्ध आवश्यक पौष्टिक तत्वों की पौधों को उपलब्धता सरल करता है। इससे पौधों की हानिकारक जीवाणुओं से सुरक्षा तथा भूमि में 'जैविक कार्बन' की मात्रा में बढ़ोतरी होती है।

2. **बीजामृत** देसी गाय के गोबर, मूत्र एवं बुझा चूना आधारित घटक से बीज एवं पौध-जड़ों पर सूक्ष्म जीवाणु आधारित लेप करके इनकी नई जड़ों को बीज या भूमि जनित रोगों से संरक्षित किया जाता है। बीजामृत के प्रयोग से बीज की अंकुरण क्षमता में अप्रत्याशित वृद्धि देखी गई है।

3. **आच्छादन** भूमि में उपलब्ध नमी को सुरक्षित रखने हेतु इसकी उपरी सतह को किसी अन्य फसल या फसलों के अवशेष से ढक दिया जाता है। इस प्रक्रिया से 'ह्यूमस' की वृद्धि, भूमि की उपरी सतह का संरक्षण, भूमि में जल संग्रहण क्षमता, सूक्ष्म जीवाणुओं तथा पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की मात्रा में बढ़ोतरी के साथ खरपतवार का भी नियंत्रण होता है।

4. **वापसा** (भूमि में वायु प्रवाह) यह वापसा, भूमि में जीवामृत प्रयोग तथा आच्छादन का परिणाम है। जीवामृत के प्रयोग तथा आच्छादन करने से भूमि की संरचना में सुधार होकर त्वरित गति से 'ह्यूमस' निर्माण होता है। इस से अन्ततः भूमि में अच्छे जल प्रबंधन की प्रक्रिया आरम्भ होती है। फसल न तो अधिक वर्षा-तूफान में गिरती है और न ही सूखे की स्थिति में डगमगाती है।

प्राकृतिक खेती के 4 सिद्धांत

1. **सह-फसल** मुख्य फसल की कतारों के बीच ऐसी फसल लगाना जो भूमि में नत्रजन (नाइट्रोजन) की आपूर्ति तथा किसान को खेती लागत कीमत की प्रतिपूर्ति करे।

2. मेढ़ें तथा कतारें खेतों के बीच कतारों में मेढ़ें तथा नालियां बनाई जाती हैं, जिनमें वर्षा का पानी संग्रहित होकर लंबे समय तक खेत में नमी की उपलब्धता बरकरार रखता है। लम्बे वर्षाकाल के समय यह नालियां तथा मेढ़ें खेतों में जमा हुए अधिक पानी की निकासी करने में मदद करती हैं।

3. स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां इस खेती विधि द्वारा जमीन में स्थानीय पारिस्थितिकी का निर्माण होता है जिससे निद्रा में गए हुए स्थानीय केंचुओं की गतिविधियां बढ़ जाती हैं।

4. गोबर भारतीय नस्ल की किसी भी गाय का गोबर एवं मूत्र, इस कृषि पद्धति में उत्तम माना गया है। क्योंकि इसमें लाभदायक सूक्ष्म जीवाणुओं की संख्या दूसरे किसी भी पशु या गाय की अन्य प्रजातियों से कई गुणा अधिक होती है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का मूल सिद्धांत है कि वायु, पानी तथा जमीन में सभी आवश्यक पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इसलिए फसल या पेड़-पौधों के लिए किसी भी बाहरी रसायनिक खाद की आवश्यकता नहीं है। यह प्राकृतिक खेती विधि, मित्र कीट-पतंगों की संख्या में वृद्धि एवं अनुकूल वातावरण का निर्माण कर फसलों को शत्रु कीट-पतंगों एवं बीमारियों से सुरक्षित करती है। इस तरह किसी भी कीटनाशक या फफूंदनाशक की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।

जीवामृत और घनजीवामृत का प्रयोग भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं तथा केंचुओं की गतिविधियों को बढ़ाता है। जो इसमें बंद अवस्था में उपस्थित विभिन्न पौष्टिक तत्वों को उपलब्ध अवस्था में बदलकर समय-समय पर आवश्यकतानुसार पौधों को उपलब्ध करवाते हैं। इस तरह सूक्ष्म जीवाणुओं तथा स्थानीय केंचुओं की गतिविधियों की सक्रियता से भूमि की उर्वरा शक्ति हमेशा-हमेशा के लिए बनी रहती है।

इस प्राकृतिक खेती की मूल आवश्यकता पहाड़ी या कोई भी भारतीय नस्ल की गाय है। इन नस्लों की गाय के गोबर में लाभदायक जीवाणुओं की संख्या दूसरी विदेशी किस्म की गायों या अन्य जानवरों की तुलना में 300 से 500 गुणा अधिक है। अत: इस विधि में अधिकतम लाभ लेने के लिए विभिन्न आदान पहाड़ी या किसी भी भारतीय नस्ल की गाय के गोबर तथा मूत्र से बनाए जाते हैं। हिमाचल प्रदेश में इस प्राकृतिक खेती के प्रचार, प्रशिक्षण एवं क्रियान्वयन हेतु एक व्यापक योजना से कार्य प्रारम्भ हो चुका है। माननीय राज्यपाल के मार्गदर्शन एवं मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में एक सर्वोच्च समिति का गठन हुआ है। इस समिति के प्रबोधन में 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' कार्य कर रही है। कृषि विभाग के आतमा परियोजना के अधिकारियों द्वारा जिला स्तर पर इस परियोजना का संचालन किया जा रहा है।

प्रतिवर्ष एक निश्चित लक्ष्य को लेते हुए सन् 2022 तक प्रदेश के सभी 9.61 लाख किसान परिवारों को इस खेती विधि से जोड़ना है। अभी तक प्रदेश के सभी जिलों के 80 विकास खण्डों में इस विधि द्वारा उत्कृष्ट मॉडल खड़े कर किसानों को इनमें भ्रमण करवाया जा रहा है। चालू वर्ष में प्रदेश की सभी 3,226 पंचायतों तक इस लक्ष्य को पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा।

प्रस्तावना

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रूप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश ने बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 7,500 करोड़ की फल–सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि–बागवानी लागत, किसान–बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरूपयोग के कारण हर 5वां फल–सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक–फफूंदनाशक अवशेष ग्रसित है, 3 से 4% फल–सब्जियों इत्यादि के नमूनों में कीटनाशक–फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर मिल रही है जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती–बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रूप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन तो घटाया ही, साथ ही रसायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' करने हेतु फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान–बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि में प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारण संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि किसान की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती विधि से जोड़ा जा रहा है। साथ ही अन्य एक लाख किसानों को विभिन्न माध्यमों द्वारा इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। अभी तक प्रदेश भर में कुल 78,792 किसान प्रशिक्षित किए गए हैं जिनमें से 77,107 ने इस पद्धति से पूरी या आंशिक रूप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें। भविष्य में ऐसे सफल किसानों की कहानियों को जिलावार प्रदेश के अन्य जिलों में भी प्रकाशित करने का प्रयास किया जाएगा।

–प्रो॰ राजेश्वर सिंह चंदेल

जिला सोलन - परिदृश्य

सोलन जिला का कुल भौगोलिक क्षेत्र 1,936 वर्ग किलोमीटर (1,93,600 हैक्टेयर) है, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 3.49% है। हिमाचल प्रदेश के जिलों में क्षेत्रफल के आधार पर सोलन जिला का 9वां स्थान है।

यहां के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती है, जिसमें वह मुख्यत: नकदी फसलों का उत्पादन करते हैं। इस जिला के किसानों को पछेती फूल गोभी (late group) का बीज उत्पादन, देश भर में सबसे पहले 1960 के दशक में करने का गौरव प्राप्त है। सोलन जिला प्रदेश भर में बेमौसमी सब्जियों का सबसे बड़ा उत्पादक है।

वर्ष भर टमाटर का उत्पादन होने की वजह से सोलन को 'सिटी ऑफ रेड गोल्ड' के नाम से भी जाना जाता है। इसके अतिरिक्त, यहां के किसान शिमला मिर्च, आलू, बीन्स, मटर, गोभी एवं ब्रोक्ली के उत्पादन को तरजीह देते हैं। जबकि फलों में सेब, किवी, खरबूजा, खुमानी और संतरा उगाया जाता है। फूलों की खेती के लिए सोलन जिला ने पूरे देश में अपनी अलग पहचान हासिल की है। यहां के फूल उत्पादक राजधानी दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथा महाराष्ट्र राज्यों तक अपने उत्पाद बेचते हैं। राष्ट्रीय एवं प्रदेश स्तर पर होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं व फूल प्रदर्शनियों में सोलन जिला के किसानों ने कई पुरस्कार अपने नाम किए हैं।

विस्तृत विवरण

कुल कृषक
53,456

भाषा
हिंदी, पहाड़ी

आबादी
5,80,320

कुल क्षेत्रफल
1,93,600 हैक्टेयर

कृषि योग्य क्षेत्र
37,746 हैक्टेयर

वर्ष 2020–21 में लक्षित प्राकृतिक खेती किसान
2,700

प्राकृतिक खेती परियोजना के क्रियान्वयन की खंडवार स्थिति

क्र.सं.	विकास खण्ड	कुल कृषक	प्राकृतिक खेती में प्रशिक्षित किसान 31 अगस्त 2020 तक	प्राकृतिक खेती कर रहे किसान 31 अगस्त 2020 तक	प्राकृतिक खेती के अधीन भूमि (हैक्टेयर में)
1	सोलन	8,190	1,181	727	26.99
2	कण्डाघाट	4,019	1,278	798	44.53
3	कुनिहार	11,758	1,350	689	29.07
4	धर्मपुर	9,753	1,149	703	28.52
5	नालागढ़	19,736	972	714	40.868
	कुल योग	53,456	5,930	3,631	169.978

सफल प्राकृतिक खेती किसान

शेर सिंह
हरिपुर पंचायत

संजय कुमार
कोठी पंचायत

राजेन्द्र शर्मा
मान पंचायत

शैलेन्द्र शर्मा
जौणाजी पंचायत

अनुभव बंसल
रड़याली पंचायत

शीतल सहायता समूह
डुगड़ी पंचायत

रवि शर्मा
बांजनी पंचायत

नरेन्द्र कुमार
नौणी पंचायत

रोहित कौशिक
क्यारटू पंचायत

प्रेम भगत
दसेरन पंचायत

पालेकर जी से प्रशिक्षण लेते ही छोड़ दी रसायनिक खेती-सफलता की ओर शेर सिंह

सोलन के गांव गम्बरपुल के किसान शेर सिंह पिछले एक साल से किसी कीटनाशक, फफूंदनाशक, खरपतवार नाशक और रासायनिक खादों का प्रयोग किये बिना 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि से सब्जियों की खेती कर सालाना लाखों रूपये कमा रहे हैं।

पालेकर जी से कुफरी (शिमला) में 6 दिन का प्रशिक्षण पाने के बाद इन्होंने सड़क पर घूमने वाली एक बेसहारा गाय को घर में बांध कर इसके गोबर–गोमूत्र से सीखी हुई विधि में प्रयोग होने वाले विभिन्न आदान बनाकर प्राकृतिक खेती करनी शुरू कर दी। अब इन्होंने देसी नस्ल की अधिक दूध देने वाली दो और गायें भी खरीद ली हैं। शेर सिंह के सब्जियों की खेती में सफल प्रयोग को देखते हुए अब आस–पास के किसान उनके खेतों में इस खेती विधि को देखने के लिए आ रहे हैं। अभी तक उनके साथ गांव के 12 अन्य किसान भी प्राकृतिक खेती विधि से जुड़ गये हैं।

"इससे पहले मैं रासायनिक खेती कर रहा था, इसमें लगातार बढ़ते खादों और कीटनाशकों के प्रयोग से मैं हमेशा खर्चों की चिंता में रहता था। लेकिन प्राकृतिक खेती ने मुझे अब चिंतामुक्त कर दिया है"

शेर सिंह का करेले का खेत

रासायनिक खेती विधि में, मैं बाजार से लगभग 1 लाख 10 हजार रूपये के कीटनाशक, फफूंदनाशक, खरपतवार नाशक और खादों की खरीद करता था, लेकिन अब हर प्रकार के इन रासायनों का प्रयोग बंद कर औरों को भी प्राकृतिक खेती से सफल किसान बनने के लिए प्रेरित कर रहा हूं।

"रासायनिक खेती के दौरान जहां करेले की फसल अक्तूबर के पहले सप्ताह तक खत्म हो जाती थी, वहीं अब प्राकृतिक खेती विधि में करेले से नवंबर के तीसरे सप्ताह में भी आमदनी हो रही है। यह किसी चमत्कार से कम नहीं है"

इस बार शेर सिंह ने 3 क्विंटल करेला बेचा है। इस खेती विधि में शेर सिंह मिश्रित खेती पर बल दे रहे हैं, जिससे उनकी आय में तो बढ़ोतरी हुई ही है, साथ में थोड़े–थोड़े समय के बाद पैसा भी आता रहता है। शेर सिंह ने करेले के साथ खीरा और अरबी भी लगाई थी जिसकी उन्हें बंपर फसल मिली है।

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
10 बीघा	टमाटर, शिमला मिर्च, खीरा, करेला, हल्दी, अदरक और अरबी	1,10,000	3,80,000	41,000	3,80,000

शेर सिंह
गांव गम्बरपुल,
पंचायत–हरिपुर,
विकास खण्ड–सोलन,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 82196–15620

कुफरी में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

परिवार से लड़कर शुरू की खेती - अब सफल किसानों में शुमार

ग्रेजुएशन करने के बाद संजय के ज्यादातर दोस्तों में कुछ तो नौकरी करने के लिए बाहरी राज्यों में चले गए और कुछ आगे की पढ़ाई करने के लिए चंडीगढ़ या शिमला की ओर रूख कर गए। ऐसे में कुनिहार क्षेत्र के गांव शामली के संजय कुमार ने कृषि को व्यवसाय के तौर पर अपनाने का फैसला किया। गांव में अपने पुरखों की जमीन पर कई वर्षों से पारम्परिक रासायनिक खेती करते–करते वह हर वर्ष फसल उत्पादन के उतार–चढ़ाव एवं लगातार बढ़ती दवाईयों के प्रयोग से तंग आ चुके थे, लेकिन 'आतमा परियोजना' के अधिकारियों ने उन्हें श्री सुभाष पालेकर के शिविर में ले जाकर उनकी तकदीर बदल दी। वहां से आते ही उन्होंने प्राकृतिक खेती करने का निर्णय लिया और आज वे अपने खेतों में हर साल लाखों की सब्जियां उगा रहे हैं। इसी के चलते वे अपने जिले के साथ प्रदेश के नामी सफल किसानों की सूची में शुमार हुए हैं।

"एक साल पहले तक मैं रासायनिक खेती कर रहा था और अपने खेतों में अच्छी पैदावार के लिए जमकर रासायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग करता था। इससे मेरी कृषि लागत में हर साल बढ़ोतरी तो हो रही थी, लेकिन मुनाफा कुछ थम सा गया था। इसी के चलते मैंने प्राकृतिक खेती को अपनाया जिससे इस साल मेरी कृषि लागत नाम मात्र ही रह गई है"

संजय कुमार का गोभी का खेत

> “इस खेती को अपनाने के बाद परिवार वालों और गांव वालों ने पागल कहकर पुकारना शुरू किया था, लेकिन इसके परिणाम आने के बाद परिवार वालों के साथ गांव वालों की सोच में भी बदलाव आया है और अब वे भी सहयोग कर रहे हैं”

संजय बताते हैं कि मैंने अपने साथ कुछ अन्य किसानों को भी जोड़ा है। मैं इन किसानों को अपनी गाय का गोबर और गोमूत्र देने के साथ इन्हें समय–समय पर खेती से संबंधित जरूरी जानकारियां भी देता हूं। जिनसे उनकी खेती–बाड़ी और बेहतर हो गई है।

मैंने अपने कुछ दोस्तों के साथ मिलकर एक समूह बनाया है। यह समूह सब्जियों को बाजार में अपने तय किए हुए दामों पर बेचता है। हमारी सब्जियों को बाजार में प्राकृतिक उत्पाद होने के नाते सही दाम भी मिल रहे हैं। जिसे देखकर बहुत से अन्य किसान भी प्राकृतिक खेती को अपनाने लग पड़े हैं।

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
12 बीघा	मक्की, आलू, माश, बीन, उड़द, रौंगी, धनिया, मूली	70,000	3,00,000	12,000	3,00,000

संजय कुमार

गांव शामली, पंचायत–कोठी,
विकास खण्ड–सोलन,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 82787–42651

पढ़ाई के बाद लिया खेती करने का निर्णय, आज लाखों कमा रहे संजय

कुफरी में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

प्राकृतिक खेती बनी वरदान, बंजर भूमि पर भी आई जानः राजेंद्र शर्मा

दो दशकों से रासायनिक खेती करने वाले सोलन जिला के गांव जाबल के किसान राजेंद्र शर्मा ने 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' को वरदान बताया है। पहले वर्ष परीक्षण के तौर पर इस किसान ने अपनी 3 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती करना प्रारम्भ किया। राजेंद्र बताते हैं कि सूखे के चलते उनकी कुछ भूमि बंजर थी और उस पर कुछ नहीं उग रहा था, लेकिन प्राकृतिक खेती ने उस बंजर भूमि पर भी जान डालकर अचम्भित कर दिया है।

इस किसान ने गोभी, शिमला मिर्च, ब्रोक्ली, मटर और आलू की खेती प्राकृतिक खेती विधि से शुरू की है, जिससे इनकी खेती लागत में कमी आने के साथ पौधों और मिट्टी की सेहत में अत्याधिक सुधार हुआ है।

"इस विधि द्वारा सफल उत्पादन के बाद आस–पड़ोस के किसान भी आकर्षित होकर मेरी फसल को देखने आ रहे हैं। मेरे खेत अब अन्य किसानों के लिए प्रशिक्षण का केन्द्र बन गए हैं"

राजेंद्र शर्मा के पॉलीहाउस में ब्रोक्ली की तैयार फसल

इस खेती विधि में पानी की भी कम जरूरत रहती है, जिससे सूखे वाले क्षेत्रों में भी आसानी से खेती–बाड़ी की जा सकती है। इसके अलावा इस विधि में उत्पादन किसी भी सूरत में घटता नहीं है, इसमें बढ़ोतरी ही होती है।

"पहले ब्रोक्ली में बहुत सारी बीमारियां आती थी और वजन भी कम रहता था। लेकिन इस बार कुछ एक पौधों में ही बीमारी आई। सबसे बड़ी बात यह रही कि बीमारी उन पौधों तक ही सीमित रही। ब्रोक्ली का आकार और वजन भी पहले की तुलना में बढ़ा जिससे इस बार अच्छा रेट मिला"

राजेन्द्र ने बताया कि जीवामृत और घनजीवामृत डालने के तुरंत बाद ही मिट्टी के नीचे देसी केंचुए आने शुरू हो गये। आच्छादन करने से पानी की खपत में भी कमी आई। पहले खेतों में जो पपड़ी बनती थी उसकी जगह अब मिट्टी अधिक भुरभुरी हो गई है, जिससे जोताई में बहुत आसानी हो रही है।

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
3 बीघा	ब्रोक्ली, गोभी, पालक, राजमाश, आलू, खीरा, शिमला मिर्च और धनिया	76,000	4,00,000	16,000	5,00,000

राजेंद्र शर्मा

गांव जाबल, पंचायत–मान, विकास खण्ड–कुनिहार,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 98164–42108

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

लागत न्यूनतम कर पाई बम्पर फसल

सोलन जिला की जौणाजी पंचायत के युवा किसान शैलेंद्र शर्मा क्षेत्र के किसानों के लिए मिसाल बनकर उभरे हैं। शैलेंद्र शर्मा ने 5 बीघा क्षेत्र में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को आधुनिक सिंचाई व्यवस्था और यंत्रों की सहायता से अपनाकर पहले ही साल में लाखों रूपये का मुनाफा कमा किसानों के सामने एक सफल उदाहरण पेश किया है।

शैलेन्द्र ने बताया कि वह कई वर्षों से रासायनिक खेती करते आ रहे हैं, लेकिन इसमें हर साल खादों, कीटनाशकों और अन्य रासायनों पर खर्चा बढ़ ही रहा था। साथ ही उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कई दिक्कतें भी पेश आ रही थी। खेती में प्रयोग हो रहे इन कीटनाशकों के प्रयोग से उन्हें एलर्जी और सिरदर्द रहना शुरू हो गया था। जिसके लिए उन्होंने पीजीआई तक से इलाज करवाया। इन सब समस्याओं से उनका खेती की तरफ रूझान लगभग खत्म हो रहा था। अब, जब से शैलेंद्र 'प्राकृतिक खेती' कर रहे हैं तो ये दिक्कतें बिल्कुल खत्म हो गई हैं।

"प्रशिक्षण पाने के तुरंत बाद मैंने बाहरी राज्य से रेड सिंधी नस्ल की दो गाय खरीदीं और 5 बीघा भूमि में टमाटर, राजमाश, बीन, शिमला मिर्च उगाना शुरू किया। इससे मुझे अच्छे परिणाम देखने को मिले। इस खेती विधि में सचमुच चमत्कार है"

शिमला मिर्च की फसल दिखाते हुए किसान शैलेंद्र

रासायनिक खेती से शिमला मिर्च के पौधों में बीमारियां आती थी और पौधे सूख जाते थे, जिससे काफी नुकसान होता था। लेकिन अब ऐसा नहीं हो रहा है और जहां बीमारी आ भी रही है वहां पर जीवामृत, खट्टी लस्सी और अन्य आदानों के स्प्रे से नियंत्रण हो रहा है।

मेरे खेतों को देखने के लिए सोलन जिला के किसानों के साथ सिरमौर और शिमला जिले के किसान भी आ रहे हैं। अब मैं अपनी पूरी भूमि में प्राकृतिक खेती विधि को अपनाने का सोच रहा हूं। मैं अपने गांव व पड़ोस के अन्य किसानों को भी इस खेती विधि से जोड़ने का प्रयास कर रहा हूं।

"कीटनाशकों के प्रयोग से मुझे हमेशा एलर्जी रहती थी, इसके अलावा सिर में दर्द, आंखों में जलन की भी समस्या रहती थी। इसके लिए मैं पीजीआई तक से हजारों रूपये की दवाईयां खा चुका था, लेकिन अब प्राकृतिक खेती अपनाने के बाद ये सब समस्याएं नहीं है। मैं अब आसानी से खेतों में बिना चिंता के घर में बनाया हुआ कोई भी छिड़काव कर रहा हूं"

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
5 बीघा	टमाटर, शिमला मिर्च, राजमाश, बीन, खीरा	80,000	9,00,000	12,000	12,00,000

शैलेंद्र शर्मा
गांव दयारग बुखार,
पंचायत–जौणाजी,
विकास खण्ड–सोलन,
मोबाइल नंबर 70185–02988

सोलन के किसान शैलेंद्र बोले, प्राकृतिक खेती से हुआ समस्या का समाधान

कीटनाशकों के प्रयोग से हो रहीं कई बीमारियां

◆ उत्पादन लागत घटी और आय में हुई बढ़ोतरी

गंगानगर से लाई रेड सिंधि नस्ल की गाय

प्राकृतिक खेती के साथ अपना रहे आधुनिक तकनीक

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

रासायनिक खेती के उत्पाद प्रयोग करने वाले लोगों में जहां कई प्रकार की बीमारियां घर कर रही हैं, तो वहीं खेतों में कीटनाशकों का प्रयोग करने वाले किसानों को भी कई प्रकार की बीमारियां हो रही हैं। सोलन के दयारग गांव के किसान शैलेंद्र शर्मा ने बताया कि रासायनिक खेती में कीटनाशकों के प्रयोग से उन्हें कई तरह की बीमारियां हो रही थीं।

रसायनों के छिड़काव से शरीर में एलर्जी होती थी, जिससे सिरदर्द, चिड़चिड़ापन जैसी समस्याएं पेश आ रही थीं। हर साल फसलों में कीटनाशकों के प्रयोग से उत्पादन लागत बढ़ रही थी, जबकि उत्पादन में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हो रही थी। ऐसे में उन्हें सुभाष पालेकर शून्य लागत प्राकृतिक खेती के बारे में पता चला। प्राकृतिक खेती से जहां एलर्जी, सिरदर्द व अन्य बीमारियों से छुटकारा मिला। वहीं उत्पादन लागत भी शून्य हो गई और उत्पादन में भी बढ़ोतरी हुई है। शैलेंद्र बताते हैं कि रासायनिक खेती करते समय हर वर्ष रसायनों पर करीब 70 हजार के करीब का खर्च आता था, जबकि प्राकृतिक विधि से खेती करने पर उत्पादन लागत बिल्कुल शून्य हो गई है। इस विधि में खेतों में हानिकारक कीटों से निपटने के लिए प्रयोग होने वाले कीटनाशकों को वह स्वयं ही तैयार करते हैं। शैलेंद्र शर्मा कुल 5 बीघा में प्राकृतिक विधि से खेती कर रहे हैं। वह 9 पॉलीहाउस में शिमला मिर्च, मटर, टमाटर समेत अन्य फसलों को उगा रहे हैं। एक साल में ही उन्होंने प्राकृतिक खेती से 12 लाख रुपये का मुनाफा कमाया है।

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

कंप्यूटर इंजीनियर नौकरी छोड़ प्राकृतिक खेती किसान बने अनुभव

चण्डीगढ़ की एक नामी आईटी कम्पनी में लाखों रूपये का वेतन पाने वाले कंप्यूटर इंजीनियर अनुभव बंसल ने अपनी लाखों रूपये की नौकरी छोड़ खेती–बाड़ी शुरू की है। औद्योगिक घराने से ताल्लुक रखने वाले अनुभव ने अपने परिवार के उद्योग में हाथ बंटाने के बजाए प्राकृतिक खेती को अपनाने का फैसला लिया। आज वे इस फैसले से काफी खुश हैं। अनुभव ने नालागढ़ के दत्तोवाल गांव में 17 बीघा भूमि में एक सफल उत्कृष्ट मॉडल खड़ा किया है।

"अभी मैंने अपने खेतों में 3 क्विंटल अदरक, 3 क्विंटल हल्दी, 1 क्विंटल लहसुन, गोभी और ब्रोक्ली लगाई है। आशा है कि अगले माह तक ये फसलें तैयार हो जाएंगी और मुझे बीज के मुकाबले 7 से 10 गुणा अधिक पैदावार मिलेगी"

मैं शहर की भाग–दौड़ भरी जिंदगी से तंग आ गया था। जब मैंने नौकरी और घर के कारोबार को छोड़ खेती करने का फैसला लिया तो परिवार की पहले से कृषि की कोई पृष्ठभूमि न होने के चलते घरवालों का विरोध भी झेलना पड़ा। पद्मश्री सुभाष पालेकर जी द्वारा दिये गए प्रशिक्षण ने मेरे फैसले को चार चांद लगा दिये। अब परिवार की ओर से भी भरपूर सहयोग मिल रहा है। खेती करने का यह मेरा पहला अनुभव है। पहले ही साल में जिस तरह से अच्छी पैदावार हो रही है उससे मेरा हौसला और बढ़ गया है, इसलिए भविष्य के लिए मैंने 100 बीघा भूमि में प्राकृतिक खेती करने का मन बना लिया है।

अनुभव बंसल के खेत में खड़ी हल्दी की फसल

"हमारे फार्म में पैदा होने वाली सब्जियों को एक बार खरीदने के बाद लोग बार–बार आ रहे हैं। इतना ही नहीं जो लोग इन्हें खरीदते हैं वे हर बार नये खरीददारों को ले आते हैं। ग्राहक जब सब्जियों को लेकर अपने अच्छे–अच्छे अनुभव साझा करते हैं तो उससे एक अलग ही खुशी मिलती है"

मैंने 'प्योरा फार्म' नाम से अपना खुद का ब्रांड भी बनाया है। इस ब्रांड के बैनर तले मैं अपने कृषि उत्पाद बेच रहा हूं, साथ ही मैं अपने आस–पास के प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को भी बाजार मुहैया करवा रहा हूं। प्राकृतिक उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है और हमारे पास हर रोज नए ग्राहक आ रहे हैं। ग्राहक ना केवल अपने लिए प्राकृतिक उत्पाद खरीद रहे हैं बल्कि वे अपने रिश्तेदारों को भी प्राकृतिक सब्जियां खरीदने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

अनुभव बंसल
गांव दत्तोवाल, पंचायत–रड़याली, विकास खण्ड–नालागढ़, जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 94180–93007

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

मेहनत • अनुभव बंसल ने आईटी कंपनी में लाखों रुपए की नौकरी छोड़कर प्राकृतिक खेती की शुरुआत की

नालागढ़ में प्राकृतिक खेती से बिना कीटनाशक के 17 बीघा में बंसल ने अदरक, लहसून, गोभी और हल्दी की फसल उगाई

मनीष पाल | नालागढ़

पूरे देश में औद्योगिक क्षेत्र के रूप में पहचान बना चुके बद्दी-नालागढ़ क्षेत्र को इसी क्षेत्र के एक युवा अनुभव बंसल ने प्राकृतिक खेती के उत्कृष्ट मॉडल के रूप में पहचान दिलवाने का बीड़ा उठाया है। नालागढ़ के दत्तोवाल गांव में 17 बीघा भूमि में एक सफल उत्कृष्ट मॉडल खड़ा किया है।

खेती करने से पहले अनुभव ने पुणे में पद्मश्री सुभाष पालेकर से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया और इसके बाद उन्होंने अपने पड़ोसी से 17 बीघा भूमि पर लीज ली और बीना कीटनाशक दवाओं के भूमि में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि के तहत हल्दी, धनिया, अदरक, मक्की, भिंडी व माश, लहसुन, गोभी, ब्रोकली व गेहूं की पैदावार शुरू की। अभी अनुभव ने शुरुआती दौर पर अपने खेतों में 3 क्विंटल अदरक, 3 क्विंटल हल्दी, 1 क्विंटल लहसुन, गोभी और ब्रोकली लगाई है। बता दें कि औद्योगिक घराने से ताल्लुक रखने वाले अनुभव पेशे से कंप्यूटर इंजीनियर हैं और एक साल पहले तक बंगलूरु की एक आईटी कम्पनी में लाखों के वेतन पा रहे थे, लेकिन बचपन से ही कृषि के जरिए धरती से जुड़कर अनुभव बंसल ने खेती की ओर रुख किया।

अपना ब्रांड बनाकर कृषि उत्पाद रहे बेच : युवा किसान अनुभव ने प्योरा फार्म नाम से अपना खुद का ब्रांड भी बनाया है। इस ब्रांड के बैनर तले वह अपने कृषि उत्पाद बेच रहे हैं। इसके साथ ही वे अपने आस-पास के प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को भी बाजार मुहैया करवा रहे हैं। बंसल का कहना है कि हमारे फार्म में पैदा वाली सब्जियों को एक बार खरीदने के बाद लोग बार-बार आ रहे हैं। इतना ही नहीं जो लोग इन्हें खरीदते हैं वे हर बार नये खरीददारों को ले आते हैं। ग्राहक जब सब्जियों को लेकर अपने अच्छे अच्छे अनुभव साझा करते हैं तो उससे एक अलग ही खुशी मिलती है।

अनुभव का कहना है कि खेती करने का यह उनका पहला अनुभव है और पहले ही साल में जिस तरह से अच्छी पैदावार हो रही है इससे उनके हौसला और बढ़ गया है। इसलिए भविष्य में अब अनुभव ने 100 बीघा भूमि में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती करने का मन बना लिया है। उन्होंने आशा जताई है कि अगले साल तक ये फसलें तैयार हो जाएंगी और उन्हें बीज के मुकाबले 7-10 गुणा अधिक पैदावार होगी। अनुभव बताते हैं शहर की दौड़-भाग भरी जिंदगी से तंग आकर उन्होंने खेती करने का फैसला लिया और आज वह इस फैसले से संतुष्ट हैं।

उन्होंने बताया कि जब उन्होंने नौकरी और घर के कारोबार को छोड़ खेती करने का फैसला लिया तो परिवार की पहले से कृषि की कोई पृष्ठभूमि न होने के चलते घरवालों का थोड़ा विरोध भी झेलना पड़ा लेकिन अब उन्हें परिवार की ओर से भरपूर सहयोग मिल रहा है।

समूह बनाकर रसायनमुक्त खेती का बीड़ा उठाया

जिला की दुगड़ी पंचायत के जाबल–जमरोट गांव की महिलाओं ने कीटनाशक एवं अन्य रासायनों के बढ़ते प्रयोग और इनसे होने वाले नुकसान से बचने के लिए क्षेत्र के लोगों को रसायनमुक्त फसलें उगाने के लिए प्रेरित करने का बीड़ा उठाया है। गांव की महिलाओं ने 'शीतल कृषि स्वयं सहायता समूह' का गठन कर मिल जुल कर 'प्राकृतिक खेती' करने का फैसला लिया है। इसके लिए इन महिलाओं के समूह की 2 सदस्यों ने पहले 'प्राकृतिक खेती' का प्रशिक्षण लिया और इसके बाद अपने समूह की अन्य सदस्यों को इस खेती विधि से जोड़ा।

"हमारे समूह में 20 महिलाएं हैं जिनमें से 11 ने प्राकृतिक खेती को अपना लिया है। शेष बची महिलाएं भी प्राकृतिक खेती को जल्द ही अपना लेंगी। पहले मेरे घर में 10,000 रूपये की कीटनाशक दवाईयां और रासायनिक खाद आती थी जोकि अब बिलकुल बंद कर दी है"

–रेशमा देवी, समूह अध्यक्षा

शीतल कृषि स्वयं सहायता समूह की सदस्य

समूह की सदस्य कांता देवी, सुमन कुमारी, कमलेश, सोनिका, कुसुम लता, कृष्णा और राम देई ने भी प्राकृतिक खेती विधि की सराहना करते हुए कहा कि उन्हें भी इस खेती विधि को अपनाने से बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। महिलाओं का कहना है कि अब वह सभी 20 के समूह में इस विधि को अपनाकर गांव के अन्य किसानों तक भी पहुंचाएंगी ताकि रसायनमुक्त खेती का यह आंदोलन घर–घर तक पहुंचे।

"यह खेती विधि बहुत ही लाभदायक है। इसमें बाजार से कुछ भी लाने की जरूरत नहीं है। इस विधि से मैंने बीन्स उगाई थी जिसकी मुझे बंपर फसल प्राप्त हुई। इस बार बिना खाद और दवाईयों के प्रयोग से मेरे खेत में 115 क्रेट बीन्स हुई है। मेरी फसल में बीमारियां बहुत कम आई और पौधे भी बहुत कम सूखे, जबकि पहले पौधों के मरने की समस्या बहुत रहती थी"

–अनिता देवी, समूह सदस्य

शीतल कृषि स्वयं सहायता समूह की सदस्य

शीतल कृषि स्वयं सहायता समूह की 2 सदस्य नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

फिल्म मेकिंग छोड़ शुरू की फूलों की खेती-लाखों कमा रहे रवि

देश–विदेश में अपने हरे–भरे जंगलों और प्राकृतिक सौंदर्य के लिए पहचाने जाने वाले चायल क्षेत्र के युवा किसान ने फूलों की खेती कर सफलता की नई इबारत लिख डाली है। चायल के बांजनी गांव के रवि शर्मा ने रासायनिक खादों व कीटनाशकों के प्रयोग के बिना असंभव मानी जाने वाली फूलों की खेती 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि से कर क्षेत्र के अन्य फूल उत्पादक किसानों के सामने उदाहरण पेश किया है।

"इस साल मैंने खेत एवं पॉलीहाउस में अलग–अलग वैराइटी की बीन्स, कलर्ड केप्सिकम, केल जैसी सब्जियां लगाई थी। मैंने सब्जियों में सह–फसल के तौर पर धनिया लगाया था। धनिया लगाने से सब्जियों में जो सफेद मक्खी की समस्या रहती थी उससे मुझे निजात मिली है"

रवि शर्मा पहले दिल्ली में 7 सालों तक फिल्म और डॉक्युमेंट्री मेंकिग के क्षेत्र में अच्छा नाम और पैसा कमा रहे थे, लेकिन घरवालों से दूर होने के चलते यह सब छोड़ कर अपने गांव वापस चले आये। गांव में खेती करने के फैसले के लिए रवि को घरवालों के विरोध का भी सामना करना पड़ा, क्योंकि न तो इन्हें और न ही इनके किसी परिवार वाले को खेती–बाड़ी का कोई अनुभव था। इसलिए शुरूआती सालों में इन्हें खेती काफी घाटे का सौदा लगने लगी थी। लेकिन प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त कर फिल्ममेकर से किसान बने रवि ने इस पद्धति से खेत में काम करना शुरू किया और अब वह सालाना 8 लाख रूपये तक की कमाई कर रहे हैं।

अपनी गेंदे की फसल दिखाते किसान रवि शर्मा

फूलों की खेती में रवि ने कारनेशन, डेजी, ग्लेडियोलस और गेंदा लगाया है। इसमें जीवामृत, घनजीवामृत और सप्तधान्यांकुर का प्रयोग कर इन्हें बहुत अच्छे परिणाम देखने को मिले हैं। इनके इस्तेमाल से फूलों की ऊंचाई और आकार में बढ़ोतरी देखने को मिली है। रवि बताते हैं कि रासायनिक खेती के दौरान खाद और दवाईयों का लगभग 40–50 हजार तक का खर्च आता था और सालाना कमाई 3–5 लाख रूपये तक होती थी।

"लगातार रासायनों के प्रयोग से मिट्टी कठोर हो गई थी और उसकी उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो रही थी। जीवामृत और घनजीवामृत के इस्तेमाल से मिट्टी का कठोरपन काफी हद तक कम हुआ है और मिट्टी की सेहत में सुधार के साथ फूलों की बढ़ोतरी बहुत ही उम्दा है"

प्राकृतिक खेती से अब खर्च लगभग शून्य है और उत्पादन बढ़ने से आमदनी में भी इजाफा हुआ है। मेरी मदद के लिए मेरे भाई ने भी निजी क्षेत्र में नौकरी को त्यागकर खेती में सहयोग करने का फैसला लिया है। इसलिए जहां अभी तक हम अपनी आधी जमीन में खेती कर रहे हैं वहां अब पूरी जमीन पर 'प्राकृतिक खेती विधि' से ही सब्जियों और फूलों की खेती के साथ सेब, इंग्लिश वेजिटेबल और विदेशी किस्म के फूलों की खेती शुरू करेंगे।

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
5 बीघा	टमाटर, शिमला मिर्च, राजमाश, बीन फूल	50,000	3,00,000	5,000	8,00,000

रवि शर्मा

गांव व पंचायत–बांजनी,
विकास खण्ड–कंडाघाट,
जिला सोलन, हि.प्र.
मोबाइल नंबर 98821–50662

चायल के युवा किसान रवि शर्मा ने 7 साल तक किया फिल्म मेकिंग का काम

फिल्म मेकिंग छोड़ अपनाई प्राकृतिक खेती

अब उगा रहे हैं फूलों की खेती

इन फसलों की कर रहे हैं खेती

प्राकृतिक खेती से बढ़ रहा मुनाफा

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

प्राकृतिक खेती से टमाटर में दोगुणा हुआ उत्पादनः नरेंद्र कुमार

सोलन की नौणी पंचायत के नरेंद्र कुमार ने 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' विधि को अपनाकर पहले ही साल टमाटर की खेती में अपने उत्पादन को दोगुणा करने का कमाल कर दिखाया है। नरेंद्र ने यह कमाल बिना किसी रासायनिक खाद और कीटनाशक के किया है, जिससे क्षेत्र के किसान और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक व शोधार्थी उनके खेतों में पहुंच रहे हैं।

"मैं मुख्यतः टमाटर और शिमला मिर्च की खेती करता हूं। पहले मुझे इनकी खेती के लिए हर साल 70 से 80 हजार रूपये की दवाईयां खरीदनी पड़ती थीं। मगर इस बार मैंने दवाइयों पर एक रूपया भी खर्च नहीं किया है"

नरेंद्र कुमार के खेत में खड़ी टमाटर की फसल

टमाटर की फसल पर जीवामृत और खट्टी लस्सी के प्रयोग ने चमत्कारी परिणाम दिये हैं। वहीं इसने उत्पादन को भी दोगुणा बढ़ा दिया। जहां पहले टमाटर के 100–150 क्रेट हुआ करते थे, वहीं अब 250 से अधिक क्रेट का उत्पादन हुआ है। इस खेती विधि से मैंने उन खेतों से भी पैदावार ली है, जिन्हें मैं पानी की कमी की वजह से खाली छोड़ दिया करता था।

प्राकृतिक खेती विधि से उगाई हुई सब्जियों की सेल्फ लाइफ बढ़ी है। इसके अलावा सब्जियों के स्वाद में भी बहुत अंतर है। जीवामृत और सप्तधान्यांकुर का प्रयोग फलों में बहुत अच्छा प्रभाव डाल रहा है। अनार और अमरूद के पौधों में इनके प्रयोग से फूलों के झड़ने की समस्या नहीं रही और पैदावार भी सही मिली। वहीं मक्की की फसल में एक बार भुट्टे तोड़ने के बाद दूसरी बार फिर से उनमें भुट्टे आये हैं। अब मैंने पालेकर जी की इस विधि से मटर, ब्रोक्ली, कीवी और ड्रेगन फ्रूट उगाने की तैयारी शुरू कर दी है।

"जब मैं रासायनिक खेती करता था तो शिमला मिर्च का सीजन अक्तूबर के शुरू के दिनों में ही खत्म हो जाता था, जबकि इस बार नवंबर में भी शिमला मिर्च की पैदावार हो रही है। इसके चलते मैंने इस बार एक बीघा खेत से 2,50,000 रूपये की शिमला मिर्च बेची है"

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
18 बीघा	टमाटर, शिमला मिर्च, राजमाश, बीन	80,000	9,00,000	12,000	12,00,000

नरेंद्र कुमार
गांव रंगा, पंचायत–नौणी, विकास खण्ड–सोलन,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 98164–35446

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

प्राकृतिक खेती ने विशेष किसान के रूप में दिलवाई पहचान

सोलन जिला के क्यारटू गांव के रोहित कौशिक ने क्षेत्र में सफल प्राकृतिक किसान के रूप में अपनी पहचान बनाई है। एमबीए की डिग्री हासिल करने के बाद रोहित ने गांव को ही अपनी कर्मभूमि बनाया और रासायनिक खेती की शुरूआत की। मगर थमते उत्पादन और बढ़ती खेती लागत ने उन्हें चिंता में डाल दिया। तभी उन्हें कम लागत में होने वाली 'सुभाष पालेकर खेती' के प्रशिक्षण में जाने का मौका मिला। इसके बाद से वे सफलतापूर्वक प्राकृतिक खेती कर रहे हैं और इसी के चलते उन्हें पूरे जिले में विशेष किसान के रूप में पहचान मिली है। रोहित ने अब तक लगभग 3 दर्जन किसानों को इस खेती विधि से जोड़ा है। हाल ही में उन्हें 'रैडक्रास सोसायटी' की ओर से आयोजित मेले में 'सफल किसान के सम्मान' से सम्मानित किया गया है।

"मैं प्राकृतिक खेती कर रहे साथी किसानों के खेतों पर भी लगातार जाता रहता हूं। क्षेत्र के किसानों को इस खेती के प्रति प्रेरित करने के लिए मैंने अपने घर में प्राकृतिक खेती में प्रयोग होने वाले विभिन्न आदानों को बनाकर एक संसाधन भंडार तैयार किया है। इसमें मैं किसानों को वाजिब दाम पर प्राकृतिक खेती के आदान मुहैया करवाता हूं"

अपने खेत में परिवार संग रोहित कौशिक

मैं अभी साढ़े 6 बीघा भूमि में खेती कर रहा हूं। मैंने करेला, गोभी, बीन, टमाटर, गाजर और खीरे की खेती से पहले ही सीजन में 3 लाख 55 हजार रूपये का मुनाफा कमाया है। प्राकृतिक खेती हिमाचल के ऐसे क्षेत्रों, जहां पर सिंचाई की उपयुक्त सुविधा नहीं है वहां के लिए बहुत फायदेमंद साबित हो रही है।

"सब्जियों और फूलों की खेती में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के जो परिणाम देखने को मिले हैं, वो चौंकाने वाले हैं। फूलों की खेती करने वाले कई किसान मेरे पास से तैयार आदान ले जाते हैं। इससे उनकी लागत में कमी आई है और उनके मुनाफे में बढ़ोतरी हो रही है"

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
6.5 बीघा	करेला, बीन, गोभी खीरा, शिमला मिर्च, गाजर	35,000	2,50,000	34,700	3,55,000

रोहित कौशिक

गांव व पंचायत–क्यारटू, विकास खण्ड–कंडाघाट,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 82198–46050

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

रोहित कौशिक का प्राकृतिक खेती संसाधन भंडार

सुभाष पालेकर खेती ने फिर मन में जगाई खेती करने की आस

कृषि में बढ़ती लागत और कम होती पैदावार से परेशान कुनिहार के दसेरन गांव के किसान प्रेम भगत खेती ना करने का मन बना चुके थे। पुश्तों से की जा रही रासायनिक खेती को छोड़कर वे शहर में नौकरी करने की सोच ही रहे थे कि इसी बीच उन्हें 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के प्रशिक्षण में जाने का अवसर मिला। प्राकृतिक खेती के इस प्रशिक्षण से उनके मन में फिर से खेती करने की आस जाग गई। आज प्रेम भगत न केवल सफलतापूर्वक खेती कर अपने पूरे परिवार का भरण पोषण कर रहे हैं बल्कि आस–पास के लोगों को भी रसायनमुक्त खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

"प्राकृतिक खेती शुरू करने के बाद मैं सभी जरूरी आदान आस–पास उपलब्ध वनस्पतियों से बना रहा हूं। मेरे खेतों की स्वस्थ लहराती फसल को देखकर बाकि किसान भी मुझसे यह खेती विधि सीखने का आग्रह करते हैं"

प्रेम भगत के खेत में खड़ी गोभी की फसल

मैंने नौणी स्थित औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय में पालेकर जी का 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया और इसके बाद अपनी 6 बीघा भूमि में पहले ही सीजन में 1 लाख रूपया शुद्ध मुनाफे के तौर पर कमाया। मैंने अपने खेतों में हरा धनिया, भिंडी, अरबी, गोभी और मूली की पैदावार की है। मुझे पहले ही सीजन में इतने बेहतर परिणाम मिलेंगे, ऐसी मैंने आशा भी नहीं की थी। पैदावार के बाद मैंने इन परिणामों को अन्य किसानों के साथ साझा किया जिससे उन किसानों का रूझान भी प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ा है।

मैंने पॉलीहाउस में भी इसका परीक्षण किया है। अपने पहले से ही तैयार 1200 Sq. ft. क्षेत्र में लगे पॉलीहाउस से मैंने 35 हजार रूपये का धनिया, 30 हजार की गोभी, 15 हजार की भिंडी, 3 हजार की मूली और 25 हजार रूपये का पपीता बेचकर कुल 1 लाख 35 हजार रूपये का मुनाफा कमाया है।

"खेती में बढ़ती लागत से निराश और हताश किसान यदि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को अपनाएंगे तो उनकी आमदनी में कई गुना अधिक बढ़ोतरी होना तय है। इस खेती में बिना लागत के बेहतर परिणाम तो मिलते ही हैं, साथ में हम जहर खाने से भी बचते हैं"

कुल क्षेत्र	फसलें	रासायनिक खेती में		प्राकृतिक खेती में	
		कुल व्यय	कुल आय	कुल व्यय	कुल आय
6 बीघा	भिण्डी, अरबी, गोभी, पपीता, धनिया, मूली	20,000	1,30,000	3,000	1,35,000

प्रेम भगत

गांव व पंचायत–दसेरन, विकास खण्ड–कुनिहार,
जिला सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल नंबर 98164–4210

नौणी विश्वविद्यालय में पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त

कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश

TOURIST

कृषि विभाग

कृषि विभाग

Himachal takes lead in adopting method

Anand.Bodh@timesgroup.com

CHANGE-MAKER: Sanjay Kumar at his farm in Kunihar, Solan

Shimla: While presenting the Budget on Friday Union finance minister Nirmala Sitharaman mentioned about implementing "zero budget natural farming" in the country.

In Himachal Pradesh, some farmers are writing new success stories by switching over to natural farming. There are some who have even left their government or private jobs to adopt it. In 12 districts of the state, a total of 2669 farmers are already engaged in this form of farming in area spread over 252 hectares of land.

In HP concept of natural farming was started by governor Acharya Devvrat. Last year, chief minister Jai Ram Thakur led state government had earmarked Rs 25 crore for propagation of natural farming. This year too state government had announced subsidy of 50 percent for purchasing cows of indigenous breed to promote natural farming. State government is also providing Rs 25,000 grant for purchasing indigenous cow.

The aim is to produce healthy food grains and avoid use of chemicals. This will reduce the cost of farming and ultimately lead to a substantial increase of income of farmers by 2022.

Manjeet Singh of Sihana village of Una district, who holds a degree in Master of Technology (MTech), is among those farmers who are now practising natural farming. When he had left his job to pursue farming not only villagers but even his family members were apprehensive about his future.

"No young person was seen in the village as they all had left the place in search of job. When I decided to give up my job for natural farming people used to make fun of me. But now they have come to learn new techniques of farming and it is benefiting all," he said.

Manjeet took training from Subhash Palekar who had conceptualized natural farming. After this, Manjeet started growing tomato, pea, coriander, cauliflower and capsicum and due to less input cost, the returns were good.

Sanjay Kumar, a resident of Kunihar in Solan district, decided to do farming after his friends went away in search of jobs. However, instead of adopting farming practices of his elders and ancestors he decided to adopt new techniques for which he had to face the opposition of family. Facing all odds, Sanjay opted for natural farming and today he is earning good income from his farms.

"Earlier, we were using chemicals and pesticides to get good production from our fields, but use of chemicals and pesticides tend to increase the input cost every year resulting into very less profit. But now, after adopting natural farming, the input cost has decreased drastically and profit has doubled," Sanjay said.

Today farmers from other places are approaching Sanjay Kumar to learn about natural farming and even agriculture department is taking farmers to his fields to teach them about natural farming. Sanjay says he has formed a group of friends who sell produce from their fields in the markets at rate decided by them.

प्राकृतिक खेती और किसान

डॉ. राजेश्वर सिंह चंदेल

पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित 'प्राकृतिक खेती' विधि जिसे 'शून्य लागत प्राकृतिक खेती' नाम से देश-विदेश में ख्याति प्राप्त हुई है, खेती लागत को न्यूनतम करती है। देश भर में 40 लाख से अधिक किसानों द्वारा इसे अपनाना, इस वादा को इंगित करता है कि यह विधि तकनीकी रूप से व्यावहारिक एवं सामाजिक स्वीकार्यता लिए हुए है...

दिव्य हिमाचल Thu, 26 December 2019

प्राकृतिक खेती में रोल मॉडल बनेगा हिमाचल

दिव्य हिमाचल

2022 से पहले प्राकृतिक कृषि राज्य बनेगा हिमाचल : देवव्रत

नौणी में प्रशिक्षण शिविर में नौ जिलों से 1000 किसानों-बागबानों ने लिया भाग

प्राकृतिक खेती से संबंधित संयुक्त मंच को जरूरत

पर्यटन, फल उत्पादन पहाड़ी राज्यों की विशेष पहचान

मानसिकता बदलें, खुले मन से जीरो बजट खेती को अपनाएं

● राज्यपाल आचार्य देवव्रत बोले, नीति आयोग ने माना यही मॉडल जरूरी

हिमाचल को प्राकृतिक कृषि राज्य बनाएं : जयराम ठाकुर

अंग्रेजों ने सत्ता दी किसानों की कुर्बानी : राज्यपाल दत्तात्रेय

दिल्लीवासियों को भा रहे हिमाचली उत्पाद

प्रगति मैदान में लगे हैं हिमाचली प्राकृतिक उत्पादों के स्टॉल

पर्यावरण हितैषी प्राकृतिक खेती

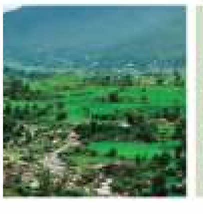

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

Natural farming gaining momentum in Himachal

ARCHANA PHULL
SHIMLA, 29 JANUARY

As many as 2,547 farmers across the hill state have partly switched to natural farming after it was promoted by Padma Shri award winner Subhash Palekar

Even as the state government may change its name from Zero Budget Natural Farming (ZBNF) to Subhash Palekar Natural Farming (SPNF) project for some reason, experimentation of natural farming is gaining momentum in Himachal Pradesh.

As many as 2,547 farmers across the hill state have partly switched to natural farming after it was promoted by Padma Shri award winner Subhash Palekar from Maharashtra, in their fields to evaluate its results.

"Cultivable land measuring around 200 hectares has come under natural farming, after the project started six months back. This includes agriculture, horticulture and vegetable production. We have so far trained 1583 farmers in the technique so far," Executive Director, Naresh Thakur told The Statesman.

"The initial results in the field are good and the farmers may fall prey to the concept once they see the success at their farm," Thakur said.

He said simultaneously research was being carried out by agriculture and horticulture scientists in the state to develop package and practice for natural farming in HP.

The total cultivable land in Himachal is over 9 lakh hectares and the state headed project, with the backup of agriculture department, aims to convert all the 9.61 lakh farmer families to natural farming by 2022.

A system of certification of the natural farming produce would also be set up in HP later.

Palekar is advising the government on this project free of cost in view of overall concerns of food safety and security. The basic objective of promotion of Palekar's natural farming concept in Himachal is to shift the farmers away from chemical farming through low cost option. It may not be zero budget in toto, but it involves less cost, lower than chemical and organic agriculture. It is based on urine and dung of 'desi cow', gives good productivity, with healthy produce.

The 'zero budget' word is being dropped now and the project is being re-named after the scientists pointed that it is 'low cost' not purely zero budget.

Moreover, Palekar, who was irked over some state claiming credit for his Zero Budget Natural Farming concept at an international platform, had pointed out at farmers camp in Kufri few months ago that it was his concept and it should be named after him. The issue is now being taken to the cabinet for name change, official sources said.

According to Dr Rajeshwar Chandel, entomologist, who is on deputation from Dr YS Parmar University of Horticulture and Forestry, Nauni to this project as Executive Director, natural farming is better than even organic farming as the latter needs compost based external input and the water requirement is also high. More so, there are apprehensions that continuous use of vermicompost (in organic farming) may add heavy metals to the soil.

"The cost of inputs in chemical as well as organic farming is very high. Whereas, natural farming is based on local flora and microbes and the focus is on rich humus. In natural farming, the indigenous earthworm recharges water in soil. It has been successful in regions with temperature from 5-18 degree Celsius," he said.

Dr Chandel said natural farming could be a definite way to increase farm income and is a direct alternative for farmers in changing climate," he said.

किसानों ने जैविक खेती से मोड़ा मुंह, प्राकृतिक खेती पर जोर

जैविक खेती पर भारी पड़ी महंगी कंपोस्ट

19 करोड़ का बजट है प्राकृतिक खेती के लिए कृषि विभाग के पास

1998 में शुरू हुई थी जैविक खेती

30 एकड़ भूमि पर प्राकृतिक खेती की जा सकती है एक देसी गाय से

गोमूत्र व गोबर से तैयार होती है खाद

एसपीएनएफ के तहत चलियावैं योजना शुरू

प्राकृतिक खेती से फूटा समृद्धि का अंकुर

प्राकृतिक खेती की बारीकियां सीखी

नौणी विश्वविद्यालय में जुटे नौ जिलों के एक हजार किसान

Zero-budget farming to tackle climate shift

AMBIKA SHARMA
TRIBUNE NEWS SERVICE

SOLAN, JANUARY 17

The district administration of Sirmaur has decided to use the much-touted zero budget farming technology introduced by the Governor to tackle climate change in three blocks of the district. The development follows clearance of a proposal sent by the Deputy Commissioner by a high level committee headed by the Additional Chief Secretary, Science and Technology.

Sirmaur is the lone such district in the state which has been selected for the climate change adaptation project of NABARD by the Government of India. A survey for the same was undertaken in the year 2016-17 and the most vulnerable blocks to climate change were identified as Sangrah, Paonta Sahib and Pachhad.

Under this project, the emphasis is on techniques that can help the farmers to mitigate the effects of climate change.

The project envisages creation of micro irrigation systems as rain water harvesting tanks and last mile farm connectivity through micro irrigation channels. A sum of Rs. 6.61 lakhs is to be spent. Small ponds at community level will be constructed at an estimated cost of 25 lakhs, informed DC Sirmaur Lalit Jain.

Besides, the district administration talking a cue from Governor Acharya Devvrat's idea has decided to initiate zero budget farming for farmers on a pilot basis under this project. The government would provide subsidy for buying indigenous variety of cow and also give intensive training on this traditional technique to the willing farmers. The government would also provide insurance cover to the farmers for any risk involved in such an experimentation.

PONDS TO BE CONSTRUCTED

- Under this project, the emphasis is on the techniques that can help farmers mitigate the effects of climate change.
- The project envisages creation of micro irrigation systems as rain water harvesting tanks and last mile farm connectivity through micro irrigation channels.
- Ponds at community level will be constructed.

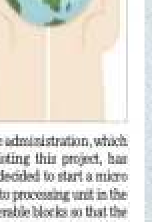

The administration, which is piloting this project, has also decided to start a micro tomato processing unit in the vulnerable blocks so that the produce is not wasted at the time of glut. The project has already hired a consultant who has started work in this area. "The core idea of all the initiatives is that farmers would run all the community projects created under this fund through farmer producer organisations. A total of 30,000 farmers are expected to be benefited by this project", explained Jain.

The three lift irrigation schemes under this project are being executed in these blocks. These involve an expenditure of 4.5 crores. These are expected to be commissioned by December.

The whole project would be concluded by December 2020.

An independent evaluation of the project would be conducted thereafter by the Government of India to gauge its success.

The Tribune Fri, 18 January 2019 https://epaper.tribuneindia.com

प्राकृतिक खेती से मिलेगी प्रदेश को नई पहचान

प्राकृतिक खेती से पैदा खाद्य उत्पाद गुणवत्ता से भरपूर : सहजल

सोलन, 2 जुलाई (ब्यूरो): सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डा. राजीव सहजल ने कहा कि प्राकृतिक खेती हिमाचल प्रदेश को आने वाले समय में एक नई पहचान देगी। उन्होंने यह बात मंगलवार को बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी में आयोजित हो रहे 6 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के 5वें दिन बतौर मुख्यातिथि शिरकत करते हुए अपने संबोधन में कही।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक खेती को लेकर अनुकूल वातावरण उपलब्ध है। इसके अलावा इतनी बड़ी संख्या में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए किसानों की मेहनत के फलस्वरूप प्रदेश प्राकृतिक खेती की नई ऊंचाइयां छुएगा। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती से पैदा होने वाले खाद्य उत्पाद न केवल गुणवत्ता से भरपूर होते हैं बल्कि स्वास्थ्य के लिए भी मुफीद रहते हैं। उन्होंने कार्यशाला में भाग लेने वाले किसानों का आह्वान किया कि वे कार्यशाला के दौरान विशेषज्ञों द्वारा बताए रास्ते पर चलते हुए हिमाचल प्रदेश को प्राकृतिक खेती वाला राज्य बनाने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के प्रति पूरी तरह से गंभीर है। यही वजह है कि आज प्रदेश के अनगिनत किसान प्राकृतिक खेती को अपना रहे हैं। आने वाले भविष्य के लिए यह एक सकारात्मक संकेत है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने पद्मश्री सुभाष पालेकर के प्रयासों की भी सराहना की और कहा कि कार्यशाला के दौरान सुभाष पालेकर का मौजूद रहना निःसंदेह किसानों को एक नई दिशा देगा।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती परियोजना के कार्यकारी निदेशक डाक्टर राजेश्वर सिंह चंदेल ने सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री का स्वागत करने के अलावा कार्यशाला को लेकर भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस मौके पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में कृषि विभाग के अधिकारियों के अलावा आत्मा परियोजना से जुड़े अधिकारी भी मौजूद रहे।

सोलन : डा. वाई.एस. परमार वि.वि. में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डा. राजीव सहजल को सम्मानित करते हुए।

प्राकृतिक खेती में मदद करेगा नीति आयोग

नौणी में प्रशिक्षण शिविर के दौरान बोले उपाध्यक्ष डा. राजीव कुमार

निजी संवाददाता - नौणी

[illegible]

हिमाचल – प्राकृतिक खेती

संकट में संभावनाएं जगाती प्राकृतिक खेती

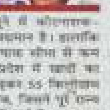

प्रो. राजेश्वर सिंह चंदेल

[illegible]

यदि खेती–बागवानी में प्रयुक्त होने वाली सभी आवश्यक आदान किसी भी भारतीय गाय के गोबर–गोमूत्र से बन जाते हो, यदि सभी बीज जनित या पौध–फल पर आने वाले रोगों या कीट इत्यादि की रोकथाम इसी गोबर–गोमूत्र एवं कुछ स्थानीय" पेड़–पौधों के मिश्रण से बन जाए तो किसान के लिए निश्चित रूप से एक सुखद तकनीक सिद्ध होगी। प्रदेश रसायनमुक्त बने, यह सभी की अभिलाषा है...

प्राकृतिक खेती : कम खर्चा आमदनी ज्यादा, अच्छी सेहत का वादा

[illegible]

कुरुक्षेत्र में सीखेंगे प्राकृतिक खेती की बारीकियां

[illegible]

सेबों पर रासायनों का छिड़काव सही नहीं

पद्मश्री किसान सुभाष पालेकर ने हिमाचल और अन्य राज्यों में सेबों पर किए जा रहे रसायनों के छिड़काव करने पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि रासायनिक खेती से न केवल फल-सब्जी खराब होती है, वहीं किसानों को भी इससे नुकसान होता है। उन्होंने कहा कि अगर सेबों को प्राकृतिक खेती के जरिए तैयार किया जाता है तो उसकी गुणवत्ता और बाजार में उसकी कीमत बढ़ जाएगी। वहीं अगर पूरे भारत में प्राकृतिक खेती की जाए तो भारत कृषि में विश्वगुरु बन सकता है।

न्यूज़ [illegible]

किसान सीखेंगे प्राकृतिक खेती की बारीकियां

[illegible]

नौणी में एक हजार किसानों को प्राकृतिक खेती पर टिप्स

विश्वविद्यालय में सजा प्रशिक्षण शिविर, पद्म श्री सुभाष पालेकर ने बांटी जानकारी

[illegible]

नौणी में प्राकृतिक खेती विषय पर किसान परिचर्चा

आचार्य देवव्रत का किसानों से प्राकृतिक कृषि को समर्पण एवं ईमानदारी के साथ अपनाने का आह्वान

[illegible]

जिला आतमा टीम

डॉ॰ रविंद्र सिंह
जिला परियोजना निदेशक आतमा

हमारी जिला की टीम बड़े ध्येयपूर्वक कार्य कर रही है। विभिन्न माध्यमों से अब तक 5,930 किसानों को 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना के दायरे में लाया जा चुका है। ब्लॉक स्तर तक के अधिकारियों के साथ समन्वय एवं किसानों का प्राकृतिक खेती हेतु रुझान हमारी सफलता को आगे बढ़ा रहा है।

डॉ॰ अजब नेगी
जिला परियोजना उप–निदेशक–I

सिटी ऑफ रेड गोल्ड कहे जाने वाले सोलन में टमाटर व शिमला मिर्च जैसी नकदी फसलों की प्राकृतिक विधि से सफलतापूर्वक खेती से यह प्रतीत हो रहा है कि जिला के किसान बड़ी तेजी से प्रसन्नतापूर्वक इस विधि को अपना रहे हैं। हम अपने तय लक्ष्य से आगे चल रहे हैं।

डॉ॰ धर्मपाल गौतम
जिला परियोजना उप–निदेशक–II

हमारा जिला में लगातार प्रवास तथा हमारे एटीएम/बीटीएम का लगातार अपनी-अपनी पंचायतों में सक्रिय रहना ही हमारे एवं किसानों के बीच इस खेती विधि को अपनाने हेतु विश्वास का प्रतीक है। हम निश्चय ही किसान को रसायनमुक्त करने में सफल होंगे।

खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

सोलन

संजय कुमार
बीटीएम

सपना कुमारी
एटीएम

शिवानी ठाकुर
एटीएम

कण्डाघाट

मोनिका चौहान
बीटीएम

अनिल भारद्वाज
एटीएम

शैलजा चंदेल
एटीएम

कुनिहार

अमन चौहान
बीटीएम

गौरव कुमार
एटीएम

अंकुश कुमार
एटीएम

धर्मपुर

निखिल कुमार
बीटीएम

सविता नेगी
एटीएम

मनीष ठाकुर
एटीएम

नालागढ़

विवेक संदल
बीटीएम

नवनीत द्विवेदी
एटीएम

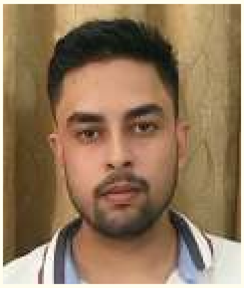

टेक चंद
एटीएम

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

- इस विधि से **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह **एंजाइम** सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक' और 'जैविक खेती' की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत **डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम** की गतिविधि (DHA) उच्चतम ($8.4\ \mu g\ TPFg^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

- इसके अलावा, **क्षारीय फॉस्फेटेज** और **अम्लीय फॉस्फेटेज** जैसी अन्य **एंजाइम** गतिविधियों को भी 'प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' से अधिकतम ($112\ \mu g\ TPFg^{-1}\ h^{-1}$) दर्ज किया गया। अतः **SPNF** प्रणाली 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले में बढ़ी हुई **एंजाइम** गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

- **SPNF** प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बागानों में, केंचुओं की आबादी उच्चतम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ / फीट^2 थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को **नाइट्रोजन, फास्फोरस** और **पोटेशियम** आदि जैसे कई पोषक तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** में प्रमुख रूप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रूप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल **(कास्टिंग)** आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी सतह में सामान्य रूप में मौजूद ह्यूमस (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

- प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह खेती विधि मिट्टी में नमी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9% अधिक बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुई है। **SPNF** खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है० से 358 कि.ग्रा./है० की वृद्धि दर्ज की गई।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

क्रम संख्या	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
1	डॉ० रविंद्र सिंह	जिला परियोजना निदेशक आतमा	94187–85407	21	211
2	डॉ० अजब नेगी	जिला परियोजना उप–निदेशक–।	94183–33549	63	
3	डॉ० धर्मपाल गौतम	जिला परियोजना उप–निदेशक–।।	70181–33549	127	

खण्ड-स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

विकास खण्ड	अधिकारी का नाम	पदभार	मोबाइल नं.	पंचायतों का दायित्व	कुल पंचायतें
सोलन	संजय कुमार	बीटीएम	98824–35775	12	35
	सपना कुमारी	एटीएम	82192–33318	12	
	शिवानी ठाकुर	एटीएम	86280–89359	11	
कण्डाघाट	मोनिका चौहान	बीटीएम	98176–82362	8	24
	अनिल भारद्वाज	एटीएम	94182–07366	8	
	शैलजा चंदेल	एटीएम	98829–63991	8	
धर्मपुर	अमन चौहान	बीटीएम	70182–74801	12	38
	गौरव कुमार	एटीएम	98170–13460	13	
	अंकुश कुमार	एटीएम	98055–72134	13	
कुनिहार	निखिल कुमार	बीटीएम	94189–05234	15	45
	सविता नेगी	एटीएम	94186–83731	15	
	मनीष ठाकुर	एटीएम	86270–23808	15	
नालागढ़	विवेक संदल	बीटीएम	94591–52864	27	69
	नवनीत द्विवेदी	एटीएम	99276–21321	21	
	टेक चंद	एटीएम	86508–83801	21	

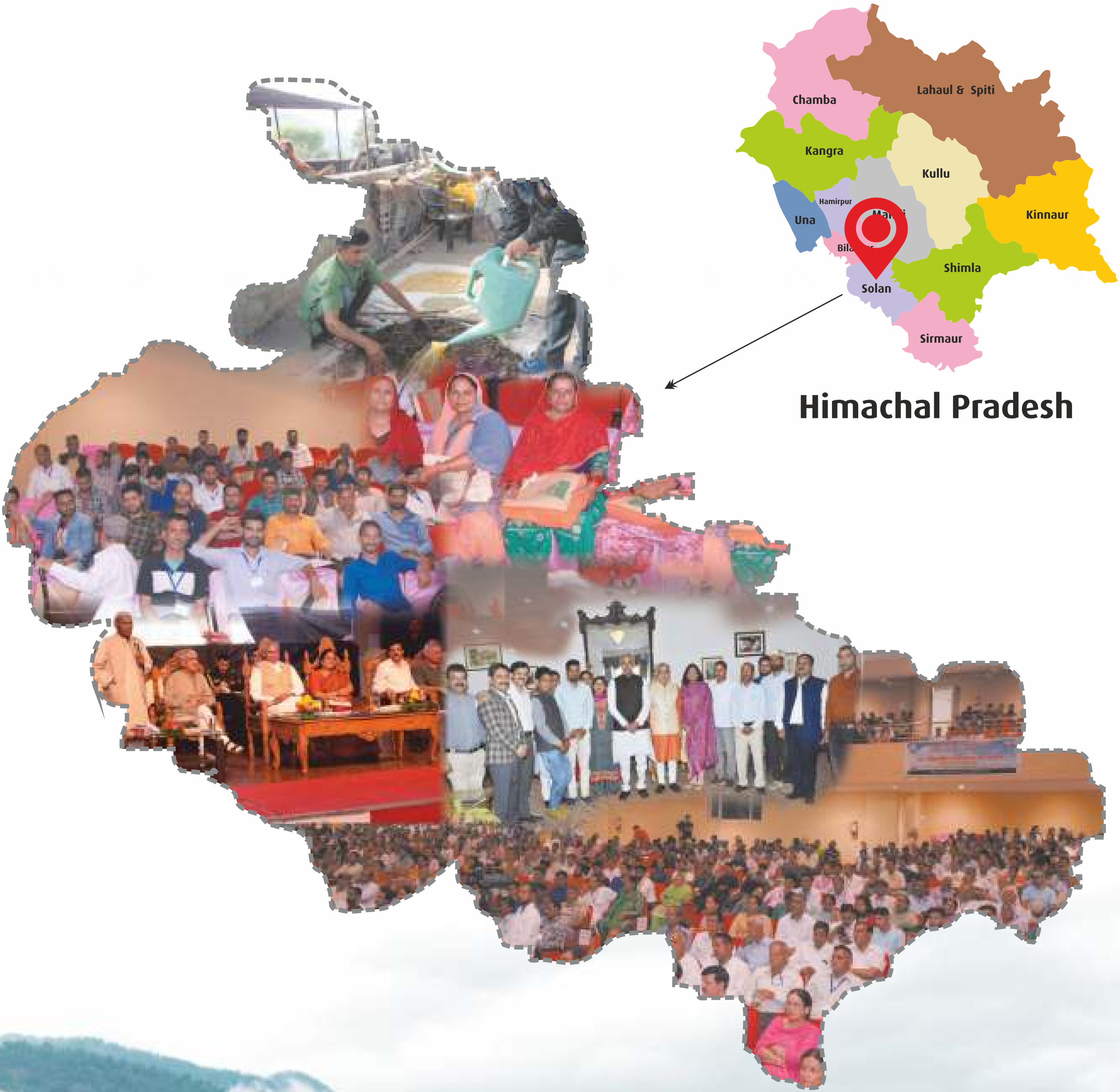

Himachal Pradesh

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
हिमाचल सरकार

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई

कृषि भवन, शिमला–5 हि.प्र. । दूरभाष 0177 2830767 । ईमेलः spnf-hp@gov.in

facebook.com/SPNFHP twitter.com/spnfhp youtube.com/SPNFHP

Designed by : Tinge Media PR Pvt. Ltd. +91-981 682 9937